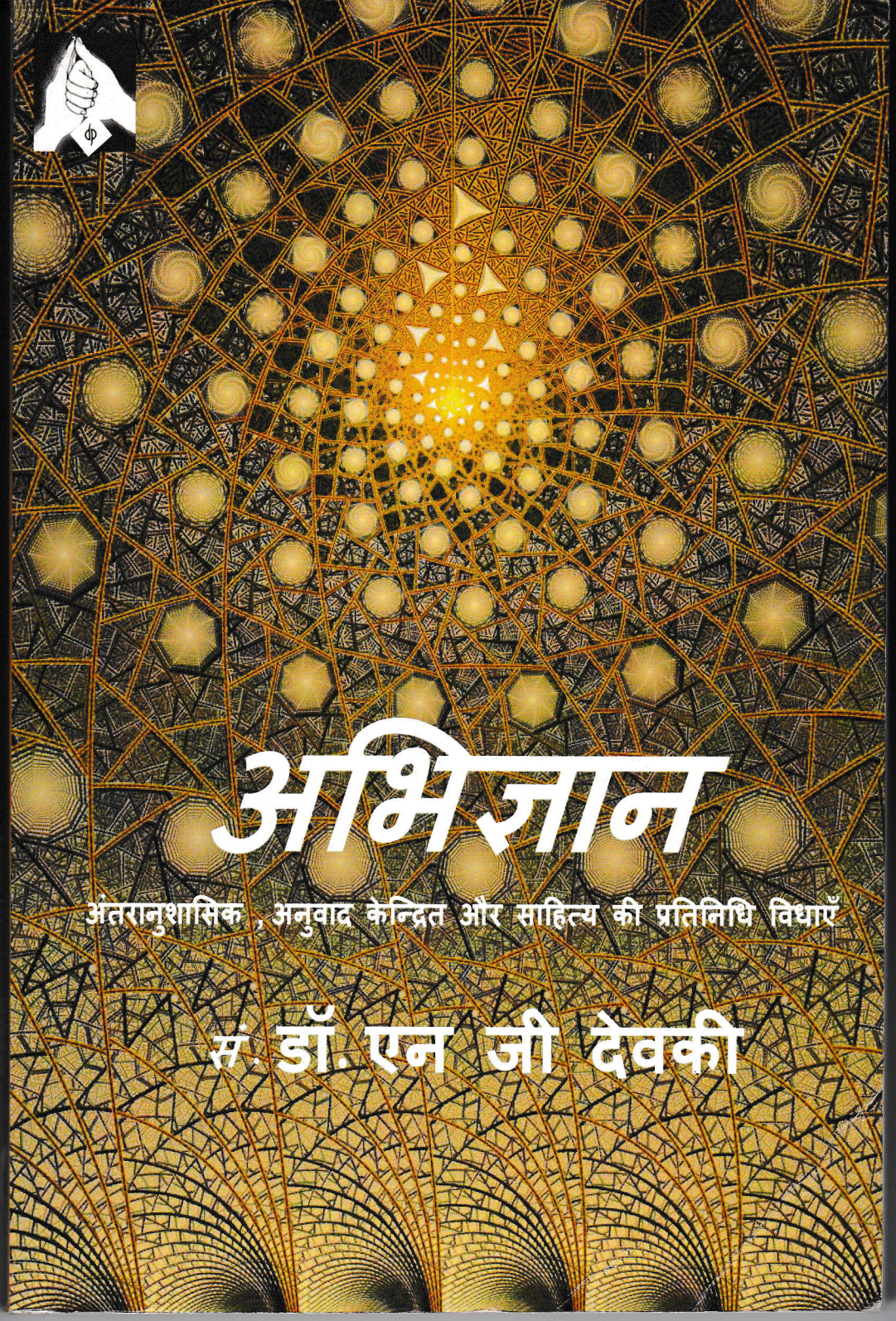
अभिज्ञान
अंतरानुशासिक , अनुवाद केन्द्रित और साहित्य की प्रतिनिधि विधाएँ
सं. डॉ. एन जी देवकी

Hindi language
Abhigyan
Antharanushasik, anuvad kendrith aur sahithya ki prathinidhi vidhayen
Research Studies

Editor
Dr N G Devaki,
Emeritus Professor,
Hindi Department
Cochin University of Science and Technology
Kochi -682022, Kerala

Coordinator
Dr Geetha Kunjamma,
Department of Hindi
Sree Sankaracharya University of Sanskrit, Kalady
Kochi -683574, Kerala

©Copyright reserved
First published 2016

Cover Design
Dr V P N Nampoori, Dr Arya Narayanan

Publisher
Devarpana Publishers,
Palakkil, Kalady, Kochi-683 674
Kerala

ISBN 978-93-5212-830-3

Printed in India
Millennium Press, Kochi
Rs 350/-

"अवभासे नवार्थस्य सम
शिक्षिता धिषणा चैवं गवे

अनुक्रमणिका

1. केरल में हिन्दी शोध की दशा और दिशा - डॉ. देवकी एन.जी — 11

2. ध्वनि एवं संगीत तत्व के आधार पर प्रसाद और निराला की कविता - डॉ. जयप्रभा सी. एस — 16

3. नाटक और कहानी का संवाद-तत्त्व - डॉ. सल्मी वर्गीज़ — 24

4. केरल की स्थानीय शब्दावली के अनुवाद की समस्याएँ - डॉ. सजीव के वावच्चन — 34

5. साहित्येतर अनुवाद की भाषिक संरचना - डॉ. ओमना पि.वि — 42

6. अनुवाद केन्द्रित अन्तरानुशासिकी - प्रमीला के पी — 56

7. अनुवाद की अर्थ वैज्ञानिक समस्याएँ - डॉ. बाबू के विश्वनाथ — 74

8. हिन्दी और अंग्रेजी की व्याकरणिकसंरचना - डॉ. डार्ली मैथ्यू — 86

9. काव्यभाषा का ऐतिहासिक विकास - डॉ. सूर्या प्रत्यूष — 98

10. रामकुमार वर्मा का कवि-कर्म - डॉ. गीता कुञ्ञम्मा सी — 119

11. स्त्री कविता का प्रतिरोध - संगीता नायर — 131

साहित्येतर अनुवाद की भाषिक संरचना

डॉ. ओमना पि.[illegible]

सारांशः *भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त साधन है। प्रत्येक भाषा की व्यवस्था भिन्न भिन्न [illegible] करती है। साहित्येतर भाषा की खास विशेषता होती है। साहित्येतर भाषा की विशेषताएँ [illegible] निर्वैयक्तिकता, स्पष्टता, असंदिग्धता, संक्षिप्तता, शिक्षा प्रभावोत्पादकता आदि। अनुवाद [illegible] भाषाविज्ञान एक दूसरे से संबद्ध है। भाषिक संरचना में ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य, अर्थ [illegible] तत्त्व आते हैं। साहित्येतर अनुवाद के संदर्भ में इन तत्वों पर विचार करना अनिवार्य है। [illegible] में स्रोत और लक्ष्य भाषा की प्रकृति पर ध्यान रखना है। भाषिक संरचना पर ध्यान न [illegible] अनुवाद अरोचक एवं गलत हो जाता है।*

बीज शब्द- **ध्वनिग्राम, संध्वनि, लिप्यंतरण, प्रतिलेखन, बाह्य संरचना, आन्तरिक संरचना, निकटतम अवयव**

साहित्यिक तथा साहित्येतर अनुवाद में अन्तर

साहित्यिक रचनाएँ शैली प्रधान होती हैं। इन में लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ द्योतन [illegible] भी क्षमता है। साहित्येतर रचनाएँ तथ्य प्रधान होती हैं। इसकी शैली अभिधा प्रधान [illegible] पहले का लक्ष्य पाठक का मनोरंजन है। लेकिन दूसरे का लक्ष्य, तथ्य संप्रेषण [illegible] साहित्यिक अनुवाद में शब्द चयन करना पडता है, साहित्येतर अनुवाद में प्रत्येक [illegible] केलिए पहले ही पारिभाषिक शब्द निर्धारित है। साहित्यिक अनुवाद में छन्द अलंकार [illegible] मुहावरे, लोकोक्ति आदि की समस्या है। साहित्येतर अनुवाद में इन की समस्या [illegible]

[illegible] साहित्यिक अनुवाद में संकेत सूत्रों प्रतीक चिह्नों आदि की समस्या नहीं [illegible] साहित्यिक अनुवाद में अर्थ बदल जाने की संभावना है लेकिन साहित्येतर अनुवाद [illegible] अर्थ परिवर्तन की गुंजाइश कम है।

[illegible] भाषा की विशेषताएँ

साहित्येतर भाषा का प्रयोग साहित्येतर विषयों के प्रस्तुतीकरण केलिए किया [illegible] इसकी विशेषताएँ हैं, निर्वैयक्तिकता, स्पष्टता और असंदिग्धता। साहित्येतर [illegible] वैयक्तिकता की छाप नहीं होती। यहाँ भाषा के प्रयोग में व्यक्ति की मानसिक [illegible] संस्कृति, देश- काल आदि का कोई स्थान नहीं है। साहित्येतर भाषा की दूसरी [illegible] स्पष्टता, जिसका कारण साहित्येतर भाषा में प्रयुक्त शब्दावली है। तथ्य स्पष्ट [illegible] प्रस्तुत करने केलिए सार्थक शब्दावली की आवश्यकता है। साहित्येतर भाषा [illegible] दुरूहता की गुंजाईश है और न अर्थ के अस्पष्ट होने की संभावना भी। [illegible] भाषा होने के कारण असंदिग्धता भी नहीं है। संकेत सूत्रों, प्रतीक चिह्नों [illegible] प्रयोग भी इसकी एक विशेषता है। तथ्य संप्रेषण ही साहित्येतर अनुवाद का [illegible] है। भाषा के छः अंश होते हैं, ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य अर्थ और लिपि। [illegible] इन सब की संरचनागत जानकारी आवश्यक है।

[illegible] अनुवाद की ध्वनि संरचना

मूल रूप से भाषा ध्वनि प्रतीकों की व्यवस्था तो है।[1] अनुवाद में स्रोत भाषा के [illegible] को लक्ष्य भाषा के ध्वनि प्रतीकों में रूपांतरित किया जाता है। भाषाविज्ञान [illegible] प्रकार होते हैं - एककालिक, बहुकालिक, तुलनात्मक, व्यतिरेकी तथा [illegible]। ये पाँच प्रकार एक दूसरे से संबद्ध हैं। तुलनात्मक भाषाविज्ञान का अनुवाद [illegible] सम्बन्ध है। 'तुलनात्मक सिद्धान्तों के आधार पर स्रोत और लक्ष्य भाषा की [illegible] सामग्री उपलब्ध होती तो अनुवाद उतना ही अच्छा होगा तथा उतने ही [illegible] किया जा सकेगा।"[2] साहित्येतर विषयों के संदर्भ में इस प्रकार तुलनात्मक [illegible] अपेक्षाकृत अधिक रूप से मिलने की संभावना है। साहित्येतर अनुवाद में [illegible] वर्णनात्मक तथा तुलनात्मक ध्वनिविज्ञान, इन दोनों प्रकारों से सहायता

लेनी पडती है। वर्णनात्मक ध्वनिविज्ञान स्रोत और लक्ष्य भाषा की ध्वनियों को [illegible] से अनुवादक इस निर्णय तक पहुँचता है कि स्रोत भाषा की किसी ध्वनि को लक्ष्य [illegible] की किसी ध्वनि प्रतिनिधि माना जाए। इस प्रकार साहित्येतर अनुवाद करते [illegible] अनुवादक के सामने ध्वनि विषयक चार स्थितियाँ हैं, जिनका आधार तुलना[illegible] ध्वनिविज्ञान है-

1. स्रोत और लक्ष्य भाषा में समान ध्वनियाँ
2. लगभग समान ध्वनियाँ
3. एक दूसरे से भिन्न ध्वनियाँ
4. स्रोत भाषा में कुछ ऐसी ध्वनियाँ होती हैं किन्तु उनके समान, लगभग [illegible] या उनसे मिलती ध्वनियाँ लक्ष्य भाषा में नहीं होती।

अंग्रेज़ी और हिन्दी में कुछ ध्वनियाँ समान हैं। संरचना में समान ध्वनि त[illegible] अनुवाद करने में समस्या नहीं होती। उदाहरणार्थ अंग्रेज़ी G, B, N, M, S आ[illegible] लिए समान ध्वनि तत्व क्रमशः ग्, ब्, न्, म्, स् है। इन ध्वनि तत्वों में समानता [illegible] कुछ शब्द हैं-

Oxygen	-	ऑक्सिजन
Gamma	-	गामा
Dacus	-	डैकस
Abjunction	-	एबजंशन

लगभग समान ध्वनि है ph(फ) bh(भ) dh(ध) th(त) आदि।

Photonics	-	फोटोनिक्स
Bhatnagar	-	भटनागर
dhaman	-	धामन

[illegible] का उच्चारण भिन्न है। Z, W आदि ऐसी ध्वनियाँ हैं। Z केलिए ज़ का [illegible] किया जाता है। W का उच्चारण व है। उदाहरण

gazatted	-	गज़टेड
witness	-	विट्नस
wing	-	विंग

[illegible] ऐसी हैं जिनका उच्चारण स्पष्ट नहीं है। यथा

island	-	ऐलन्ड
pteridophyta	-	टेरिडोफैइटा
Oesophagua	-	ईसोफैगस
Wrist	-	रिस्ट
Psychology	-	सईकोलजी

[illegible] भाषा का या इनसे मिलती जुलती ध्वनि का लक्ष्य भाषा में न होना अनुवाद [illegible] समस्या है। हिन्दी के झ, ज्ञ, ष आदि इस प्रकार की ध्वनियाँ हैं। साहित्येतर [illegible] के संदर्भ में ध्वनिग्राम और संध्वनि पर विचार करना समीचीन है। भाषा के [illegible] और ध्वनियों को ध्वनिग्राम कहते हैं। ध्वनिग्राम के जिन विभिन्न रूपों का प्रयोग [illegible] किया जाता है, वह संध्वनि (allphone) है। क ध्वनिग्राम में तीन संध्वनियाँ [illegible] (camp) कोट (coat) और कोपी (copy) अंग्रेज़ी के ख़. क आदि के लिए [illegible] का प्रयोग किया जाता है।

[illegible] सामग्री में दो प्रकार के शब्द मिलते हैं, एक तो वे जिनका अनुवाद [illegible] जाता है। दूसरे, वे जिनका अनुवाद नहीं किया जाता। ऐसे शब्दों को अनुवाद [illegible] करने को दो मार्ग हैं, लिप्यंतरण Translation और प्रतिलेखन transcrip-[illegible] लिप्यंतरण में स्रोतभाषा की वर्तनी में प्रयुक्त अक्षरों के स्थान पर लक्ष्य भाषा के [illegible] अक्षरों का प्रयोग किया जाता है। A.T.P, carbon, electron आदि का [illegible] है, क्रमशः ए टी पी, कार्बन, इलक्ट्रोण। प्रतिलेखन में वर्तनी पर ध्यान न

देकर उच्चारण को आधार मानकर उसका अनुवाद किया जाता है Oenometer,ईनोमीटर, oestron ईस्टरोण, xerography ज़ीरोग्राफी, xan सन्तोफिल्स। लिप्यंतरण और प्रतिलेखन का आधार ध्वनिविज्ञान है।

अंग्रेज़ी और हिन्दी दोनों की ध्वनि रचना में अन्तर देखने को मिल में कुछ न कुछ समानता है, फिर भी काफी भिन्नता है। साहित्येतर अनुवाद भाषाओं की ध्वनि संरचना के बारे में अवगत होना चाहिए, क्योंकि ध्वनि लघुतम इकाई है जिससे भाषा का निर्माण हुआ है।

साहित्येतर अनुवाद की शब्द संरचना

अनुवाद केलिए शब्दविज्ञान की आवश्यकता है, क्योंकि शब्द अ पर भाषा की लघुतम स्वतंत्र इकाई है। अर्थात अर्थवान शब्दों के प्रयोग से विनिमय एवं प्रस्तुतीकरण किया जाता है। अनुवाद करते समय आवश्य उपसर्ग, प्रत्यय, समास आदि के सहारे नए शब्द बनाकर प्रयोग किया साहित्येतर अनुवाद में भी इस प्रकार शब्द निर्माण किया जाता है।

साहित्येतर अनुवाद के संदर्भ में शब्दों को निम्नांकित आधारों प किया जा सकता है-

1. इतिहास
2. अर्थ
3. प्रयोग

इतिहास के आधार पर भारतीय भाषाओं के शब्दों को तत्सम, तद्भ और देशज इन चार विभागों में बाँटा का सकता है। विभिन्न साहित्येतर वि आनेवाले कुछ तत्सम शब्द हैं

molecule	- अणु
disease	- रोग
learning	- अधिगम
vein	- शिरा

..., तत्सम शब्दों से विकसित शब्द हैं।

acknowledgement	- पावती
copper	- ताम्बा
mango	- आम
ear	- कान
wing	- पंख
leaf	- पत्ता

... संस्कृत ताम्र से बना है। उसी प्रकार आम संस्कृत के आम्र से, कान कर्ण ... और पत्ता पत्र से उत्पन्न शब्द हैं। विदेशी शब्दावली भी साहित्येतर ... में आती है-

Rose	- गुलाब
court	- अदालत
recommentation	- सिफारिश
notice	- नोटिस

... शब्द आते हैं, तेंदुवा, तोता, चूहा आदि।

... के आधार पर सामान्य, अर्धपारिभाषिक और पारिभाषिक ये तीन प्रकार ... होते हैं। सामान्य शब्द सामान्य व्यवहार में प्रयुक्त हैं

light	- रोशनी
wind	- हवा
fruit	- फल
heart	- दिल

पारिभाषिक शब्द ऐसे शब्द हैं जो सामान्य भाषा में सामान्य शब्द के रूप में और ... विषयों में, विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त हैं।

function	- समारोह, गुणफलन, प्रकार्य
junction	- चौराहा, जोड

figure	- आकृति, रकम
block	- रुकावट, भूमिखंड
balance	- शेष, तुलन

पारिभाषिक शब्द विज्ञान जैसे विशिष्ट विषयों में सुनिश्चित अर्थ में प्रयुक्त

Radiator	- विकिरक
Coat	- लेप
circular	- परिपत्र
cathode	- कैथोड

तथ्य या सूचना प्रधान साहित्य के अन्तर्गत विभिन्न वैज्ञानिक, सम
भाषावैज्ञानिक विषय है। इन सभी विषयों में सामान्य, अर्धपारिभाषिक तथा
शब्दावली आती हैं। इन शब्दों के प्रयोग से अनुवादक परिचित है तो श
समस्या का समाधान एक हद तक संभव है। शब्द के स्तर पर लक्ष्य भाष
तो साहित्येतर अनुवाद अपेक्षाकृत सरल बन जाएगा।

साहित्येतर अनुवाद की रूप संरचना

अनुवाद में स्रोत भाषा के रूपों को लक्ष्य भाषा के रूपों में पारिभा
जाता है। इसी कारण से रूपविज्ञान और अनुवाद एक दूसरे से सम्बन्धित है।
से तात्पर्य है कि किसी भाषा के मूल शब्दों को धातुओं के आधार पर वि
में रचना। स्रोत और लक्ष्य भाषा की रूप रचना से परिचित होना अनुवाद
इसलिए महत्वपूर्ण है कि वह रूप रचना के आधार पर स्रोत भाषा में आवश्य
तभी नए शब्दों का निर्माण कर सकता है। यदि अनुवादक रूप रचना के
परिचित नहीं है तो अर्थ, अनर्थ हो जाता है। साहित्येतर अनुवाद में निम्नांकि
के रूपों को देखा जाता हैं।

1. प्रत्यय से शब्दों का गठन

संज्ञा से विशेषण

analysis	विश्लेषण	analytical	विश्लेषणात
classification	वर्गीकरण	classifide	वर्गीकृत

विशेषण

indicate	सूचित करना indicated	सूचित
develop	विकसित करना developed	विकसित
create	स्थापित करना created	स्थापित

से शब्दों की रचना

department विभाग
reputed विख्यात
educated सुशिक्षित

से शब्दों की रचना

Secretariat	सचिवालय
treasurer	कोषाध्यक्ष
programmed learning	योजनाबद्ध अधिगम
body colour कायिक	वर्ण

साहित्येतर अनुवाद में अनुवादक को शब्द चयन करने की ज़रूरत नहीं है।
की संरचना के बारे में जानना आवश्यक है। microscope-microscopic,
my -academic आदि का अन्तर समझने केलिए रूपविज्ञान की आवश्यकता

अंग्रेजी में कुछ शब्दों के बहुवचन रूप बनाने केलिए S जोडता है। molecule,
ecules, member- members, vein- veins आदि। कुछ शब्दों के बहुवचन
बनाने केलिए f के स्थान पर, ves का प्रयोग किया जाता है- leaf- leaves,
knives, wolf-wolves आदि। कुछ शब्दों के साथ es, ies आदि जोडा जाता
mango- mangoes, microbs- microbes, logos- logoes, factory- fac-
es आदि।

कुछ शब्द एकवचन में एक अर्थ में प्रयुक्त होता है तो बहुवचन में दूसरे अर्थ
water- waters, wood- woods, air-airs आते हैं।

स्रोत और लक्ष्य भाषा की रूप रचना के बारे में जानने से ही अनुवादक सामग्री को ठीक से समझ सकता है और आवश्यकतानुसार नए रूपों का निर्माण करके अपने प्रयोग में अनुवादों से परिचित होकर गलतियों से बच सके।

साहित्येतर अनुवाद की वाक्य संरचना

साहित्यिक अनुवाद की तरह साहित्येतर अनुवाद में भी वाक्यविज्ञान की सहायता आवश्यक है। यहाँ विषय के अनुरूप स्रोतभाषा में दिए गए वाक्यों को लक्ष्यभाषा की प्रकृति के अनुकूल में रूपांतरित किया जाता है। वाक्य रूपातंरण के लिए स्रोत भाषा की वाक्य संरचना और लक्ष्य भाषा के वाक्य गठन दोनों की अच्छी जानकारी की ज़रूरत है। मान लीजिए साहित्येतर सामग्री का अनुवाद अंग्रेज़ी से हिन्दी में करना है। अंग्रेज़ी की वाक्य रचना और हिन्दी की वाक्य रचना में भिन्नता है। अतः विभिन्न भाषाओं के वाक्यों का विश्लेषण का विज्ञान, वाक्यविज्ञान अनुवाद में निश्चय ही बहुत सहायक है।

साहित्येतर अनुवाद के सन्दर्भ में वाक्य संरचना के लिए आवश्यक तत्वों को भिन्न प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है-बाह्य संरचना (surface structure) आन्दरिक संरचना (deep structure) आदि साहित्येतर अनुवाद में वाक्य की बाह्य रचना से ही अर्थ स्पष्ट हो जाता है। तात्पर्य यह है कि यहाँ प्रायः अभिधा शैली का प्रयोग किया जाता है। आन्दरिक अर्थ के बारे में सोचने की ज़रूरत नहीं है। अर्थात लाक्षणिक या व्यंग्यार्थ ढूढने की आवश्यकता नहीं।

निकटतम अवयव (Immediate constituent)

वाक्य में प्राप्त खंडों या शब्दों को अवयव कहते हैं। किसी वाक्य का ठीक अर्थ समझने केलिए अवयवों के आपसी सम्बन्ध जानना आवश्यक है। अनुवादक को भी निकटतम अवयवों का ध्यान रखना चाहिए। निकटतम अवयव के आधार पर ही अर्थ की इकाइयाँ बनती हैं। उदाहरणार्थ-

Let (sn) be a sequence containing all rationals. इसका अनुवाद है

1 2 3 4 5 6 7 8 9

मान लीजिए (sn) सब परिमेय संख्याओं का यह अनुक्रम है। इस वाक्य में नौ अवयव हैं। विभिन्न स्तरों पर इनकी निकटता देखें तो-

मान लीजिए (sn) सब परिमेय संख्याओं का अनुक्रम है चार अवयवों में रखा जा सकता है। फिर इन चार को तीन अवयवों में रखा जा सकता है- मान लीजिए (sn) सब परिमेय संख्याओं का अनुक्रम है। फिर इनसे- मान लीजिए (sn) सब परिमेय का अनुक्रम है। फिर इन से एक वाक्य बन जाता है। प्रस्तुत वाक्य में (sn) और अनुक्रम एक साथ नहीं आते हैं। लेकिन अर्थ की दृष्टि से देखें तो इन दोनों का सम्बन्ध हैं और वे निकटतम अवयव हैं।

सहप्रयोग

भाषा में सहजता लाने केलिए सहप्रयोग की आवश्यकता है। भाषा में शब्दविशेष के साथ शब्दों का प्रयोग नहीं होता। एक विशेष अर्थ लाने केलिए विशेष शब्द का प्रयोग किया जाता है। साहित्येतर विषयों के संदर्भ में भी यह बात लागू है। अंग्रेज़ी का application form हिन्दी में आवेदन पत्र है। आवेदन रूप नहीं। Rocket in flight के लिए रॉकेट उड़ान भरना है। Extension of leave छुट्टी बढाना है।

लिंग

अनुवादक को स्रोत और लक्ष्य में व्याकरणिक लिंग से सम्बन्धित नियमों के बारे में अवगत होना आवश्यक है। एक उदाहरण से यहाँ व्यक्त किया जा सकता है। When current flows through a coil or a circuit, a magnetic field is produced in it. जब धारा एक कुण्डली से होकर बहती है तो उस में एक चुम्बकीय क्षेत्र उत्पन्न होता है। प्रस्तुत वाक्य में धारा, कुण्डली आदि स्त्रीलिंग शब्द हैं। यदि इन्हें पुल्लिंग समझकर अनुवाद करेंगे तो वह भाषा की प्रकृति के अनुसार न होने के कारण, अशोभनीय बन जाएगा।

वचन

प्रत्येक भाषा का अपना वचन संबन्धी नियम होता है। अनुवादक को इसपर भी ध्यान रखना है। अंग्रेज़ी के कुछ शब्द ऐसे हैं जिनका एकवचन और बहुवचन एक ही होता है। cold, furniture, people आदि उदाहरण हैं।